Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

आर्ष महाकाव्यों में तीर्थ स्थल

डॉ0 जी.एल. पाटीदार
असिस्टेंट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज०)

नीतू शर्मा
शोधकर्त्री, संस्कृत विभाग,
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज०)

Article Info
Volume 4, Issue 1
Page Number : 01-12
Publication Issue :
January-February-2021

सारांश- रामायण और महाभारत को आर्ष महाकाव्य कहा जाता है। रामायण और महाभारत प्रादुर्भाव काल से भारतीय सनातन धर्म, संस्कार, संस्कृति और सभ्यता के आदर्श ग्रंथ रहे हैं। सनातन भारतीय संस्कृति में तीर्थों का अपना विशिष्ट महत्व है। वैदिक काल से लेकर अत्यावधि तक तीर्थों को आधार बनाकर कई रचनाओं का सृजन हुआ है। तथा रचनाधर्म में वर्णनाधिक्य भी देखा गया है, जो हमारी सनातन संस्कृति के संवर्धक एवं पोषण का कार्य कर रहा है। तीर्थों की उत्कृष्टता का अद्भुत दर्शन हमें आर्ष काव्यों में भी दिखाई देता है। भारतीय सनातन संस्कृति में तीर्थ धार्मिक और आध्यात्मिक महत्त्व वाले स्थानों को कहा जाता है। हमारी सनातन संस्कृति में तीर्थ स्थान पवित्रता और पावनत्व के सूचक है, तथा परमतत्त्व कैवल्य के मार्ग। मानव जीवन की यात्रा का परम ध्येय मोक्षत्त्व प्राप्त करना ही है, और उसके साधन यही पवित्र धाम रहें है। मनुष्य ने जब भी देवत्व का रूप धारण किया, और वह जिन स्थानों-स्थलों पर निवास भ्रमण किया वे पवित्र तीर्थ हो गएँ। इस आलेख में आर्ष काव्यों में तीर्थ स्थलों का महत्त्व नाम सहित प्रतिपादित किया जा रहा है, तथा मानव जीवन में इनकी महत्ता भी ।

Article History
Accepted : 01 Jan 2021
Published : 04 Jan 2021

कूटशब्द- आर्ष, तीर्थ, काव्य, महाकाव्य, रामायण, महाभारत, वाल्मीकि, वेदव्यास, यात्रा, पुष्कर, ऋषि, श्रीराम, आदि।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

आर्ष शब्द- मनु आर्ष शब्द के विषय में वर्णन करते हुए कहते है कि- जो वेद और धर्मशास्त्र के अनुकूल आचरण करता है, और कहा भी है-

आर्षं धार्मोपदेशं च वेदशास्त्रोऽविरोधिना ।

यस्तर्केणानुसन्धत्ते स धर्मं वेद नेतरः ।।[i]

आर्ष शब्द से तात्पर्य है- ऋषियों से संबंधित अर्थात् जो ऋषियों की वाणी से मुखरित होकर उत्पन्न हुआ हो, जो ऋषियों द्वारा लाया गया हो अथवा जो ऋषियो द्वारा किया गया हो। आर्ष शब्द की व्युत्पति है- ऋषि वि त्रि., ऋषि संबंद्व, ऋषियों द्वारा लाया हुआ, ऋषियों द्वारा किया हुआ।[ii] आर्ष शब्द का समानार्थी शब्द है 'आदि' अर्थात् प्रारम्भ। आदि शब्द के विषय में अमरकोश में कहा है- "**पुंस्यादिः पूर्वपौरस्त्यप्रथमाद्या अथास्त्रियाम्**।[iii] किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने का सर्वप्रथम कारण, कार्य का मूल हेतु कार्य का प्रारब्ध ही उसे 'आर्ष' की संज्ञा देता है। वेद आर्ष ऋषियों द्वारा रचित कहलाते है। वेद चूंकि मौखिक परम्परा से रचित है अतः वे अपौरुषेय व अलौकिक रचनाएं कहलाती है। परन्तु लौकिक साहित्य की सर्वप्रथम रचनाएँ महाकाव्य रूप में लिपिबद्ध रामायण और महाभारत को गिना जाता है। रामायण व महाभारत की घटनाएं चूंकि पूर्व घटित हो चुकी थी और भविष्य के जनकल्याण की भावना हेतु ऋषियों द्वारा इन्हें लिपिबद्ध किया तथा जिस कारण इनके रचियता को आदिकवि (वाल्मीकि व वेदव्यास) तथा महाकाव्यों को आर्ष महाकाव्य कहा गया है। आर्ष शब्द विषय में व्यासजी कहते है-

आर्षमप्यत्र पश्यन्ति विकर्मस्थस्य पाननम् ।

न तादृक्सदृशं किञ्चित् प्रमाणं दृश्यते क्वचित्।।[iv]

शास्त्र-विपरीत कर्म करने वाले को दण्ड देने की जो बात आती है, उसमें वे आर्ष प्रमाण भी देखते है। ऋषियों के वचनों के समान दूसरा कोई प्रमाण कहीं भी दिखाई नहीं देता। ऋषियों की वाणी ही आर्षवाक्य एवं आर्षशब्द है। महर्षि वाल्मीकि और वेदव्यास ऋषि मुनीश्वर है अतः उनके काव्य भी आर्ष काव्य ही कहलाते है।

तीर्थ शब्द- तीर्थ शब्द का अर्थ 'तारणा' होता है। तीर्थ शब्द प्लवन- तरणार्थक- तृ धातु से पातृदिवचि (2/7) इस उणादि सूत्र से थक् प्रत्यय करने पर निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है तरति अर्थात् 'पापादिकं यस्मादिति तीर्थम्'।[v] जिससे पापादि से तर जाये, उसे तीर्थ कहते है। पुण्य का संचय और पाप निवृत्ति। विश्वकोष के अनुसार- "तीर्थ शास्त्रदेवेक्षत्रो पायोपाध्यायमत्रिषु। अवतारर्षिजुष्टाम्भः स चु विश्रुतम्।" शास्त्र, यज्ञ,

क्षेत्र, उपाय, उपाध्याय, मंत्री, अवतार, ऋषि, सेवित, जल आदि तीर्थ है। अमरकोश में "निपानागमयोस्तीर्थमृषिजुष्टे जले गुरौ"[vi] आदि को तीर्थ कहा है। भट्टोजी दीक्षित ने उणादि 2/7 की व्याख्या करते समय तीर्थ शब्द को शास्त्र, क्षैत्र तथा उपाध्याय आदि का बोधक माना है।[vii] भारत भूमि में सर्वत्र कहीं तीर्थ विद्यमान है। मनु ने भी तीर्थ शब्द को पवित्र बताया है-"तीर्थं तद्धव्यकव्यानां प्रदाने सोऽतिथिः स्मृतः।[viii] पुराण साहित्य में तीर्थों का महत्व स्पष्ट मिलता है। रामायण एवं महाभारत आर्ष महाकाव्यों में भी तीर्थो का महत्व वर्णित किया गया है। यहाँ तीर्थ के अन्तर्गत उन सभी स्थलों को लिया गया है जो प्राचीन समय में ऋषि मुनियों की तपःस्थली रहे हो, निवास स्थल रहे हो। ऐसे स्थलों में, नगर, मंदिर, देवस्थान, आश्रम, नदियाँ, नदी-तट, समुद्र तट, वृक्ष, वन, तालाब, सरोवर आदि को उल्लेखित किया गया है।

वाल्मीकि रामायण-

रामायण वैश्विक भूमंडल में उपलब्ध साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। रामायण को यह उच्च स्थान अकारण ही उपलब्ध नहीं हुआ है, अपितु भारत के अनेक महामनीषियों की एकांत ज्ञान जिज्ञासाओं के परिणाम स्वरूप प्राप्त हुआ है। जिन्होंने घर द्वार, माया, मोह, धन, संपत्ति यहां तक की आत्म नाम और आत्मकीर्ति से भी विमुख होकर निर्जन अरण्यों में अपने सारे जीवन को अपनी महानतम कृतियों के सृजन में व्यय कर दिया है। जिनका वास्तविक नाम आज तक हमें विदित नहीं, उनके व्यक्तित्व बोध का संकेत आज हमारे पास बचा रह सकता है, ऐसे ही थे मुनि वाल्मीकि और ऐसी ही है उनकी अमर कृति रामायण। रामायण के युद्ध काण्ड में वर्णन आता है, कि-

आदिकाव्यमिदं चार्षं पूरा वाल्मीकिना कृतम् ।[ix]

श्रुणोति य इदं काव्यं पूरा वाल्मीकिना कृतम् ।[x]

अर्थात् यह ऋषि प्रोक्त आदिकाव्य रामायण है जिसे पूर्व काल में महर्षि वाल्मीकि ने बनाया था। रामायण आर्ष महाकाव्यों की श्रेणी में अग्रगण्य है और इनके रचियता वाल्मीकि को 'आदिकवि' कहा है। वाल्मीकि ने जब तमसानदी पर स्नान करते हुए एक युगल क्रौञ्च पक्षी के जोड़े में से एक को किसी अज्ञात के बाण से घायल होकर विरह पीड़ा से करुण विलाप करते देखा तब अनायास ही उनके मुख से एक श्लोक निकल गया-

मां निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।

यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधी काममोहितम् ।।[xi]

इस विषय पर ध्वनिकार भी कहते है "क्रौञ्चद्वन्द्वियोगोत्थः शोकः श्लोकत्वमागतः[xii] उस करुण विलाप को देख कर शोक श्लोक रूप में आ गया। जो आगे जाकर महान् श्रीराम के चरित्र पर आधारित रामायण महाकाव्य में परिणित हुआ अतः इसी कारण यह रामायण महाकाव्य आर्ष, ऐतिहासिक तथा परवर्ती कवियों के लिए उपजीव्य महाकाव्य कहा कहलया जाने लगा।

आर्ष महाकाव्य महाभारत-

भारतीय साहित्य में वेदों के पश्चात् प्राचीन सर्वमान्य ग्रन्थों में महाभारत का स्थान सर्वोच्च है। सभी प्रकार का भारतीय साहित्य महाभारत पर अवलम्बित होने से इसे 'यन्न भारते तन्न भारते' भी कहा-कहलाया जाने लगा है। अर्थात् जो भारत में नहीं हैं, वह महाभारत में भी नहीं है, यानि महाभारत में भारत का सम्पूर्ण समावेश हैं। और भी कहा जाता है महाभारत के विषय में -

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ ।

यदि हास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत् क्वचित् ।।[xiii]

चतुवर्ग अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के विषय में जो कुछ महाभारत में कहा गया है, वही अन्यत्र प्राप्त होता है और जो इसमें नहीं है वह कहीं नहीं हैं। और भी कहा है कि-

भारतस्य वपुह्ययोतत् सत्यं चामृतमेव च ।

नवनींत यथा दद्धनोद्विपदां ब्राह्मणों यथा ।।[xiv]

आरण्यंक च वेदेभ्य औषधिभ्यो·मृतं यथा ।

ह्रदानामुदधिः श्रेष्ठो गौर्वरिष्ठा चतुष्पदाम् ।।

यथैतानीतिहासानां तथा भारतमुच्यते ।[xv]

अर्थात् यह अध्याय महाभारत का मूल शरीर है। यह सत्य एवं अमृत है, जैसे दही में नवनीत मनुष्यों में ब्राह्मण, वेदों में उपनिषद्, औषधियों में अमृत, सरोवरों में समुद्र, और चौपायों में गाय सबसे श्रेष्ठ है वैसे ही उन्हीं के समान इतिहासों में यह महाभारत भी विश्वविख्यात है अर्थात् सर्वश्रेष्ठ हैं।

महाभारत सनातन धर्म का एक प्रमुख महाकाव्य है। कभी-कभी केवल भारत कहा जाने वाला यह काव्य ग्रंथ भारत का अनुपम धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक और दार्शनिक ग्रंथ है। विश्व का सबसे लम्बा यह

साहित्यिक ग्रंथ और महाकाव्य, सनातन धर्म के मुख्यतम ग्रंथों में से एक है। इस ग्रंथ को सनातन धर्म में पंचम वेद माना जाता है। यद्यपि इसे साहित्य की सबसे अनुपम कृतियों में से एक माना जाता है आज भी यह ग्रंथ प्रत्येक भारतीय के लिए एक अनुकरणीय वन्दनीय है। यह कृति प्राचीन भारत के इतिहास की एक महान् गाथा है।[xvi] महाभारत एक ऐतिहासिक तथा आद्य महाकाव्य कहलाता है। महाभारत के आदिपर्व के अनुक्रमणिकापर्व के अन्तर्गत वर्णन आता है कि व्यासजी ने उपाख्यान भाग को छोड़कर चौबिस हजार श्लोकों की भारतसंहिता बनायी, जिसे विद्वान पुरुष भारत कहते है। इसके पश्चात् महर्षि ने पुनः पर्वसहित ग्रंथ में वर्णित वृतान्तों की अनुक्रमणिका का एक संक्षिप्त अध्याय बनाया, जिसमें केवल डेढ़ सौ श्लोक है।[xvii] तत्पश्चात् व्यासजी ने साठ लाख श्लोकों की एक दूसरी संहिता बनायी। उसके तीस लाख श्लोक देवलोक में तथा पन्द्रह लाख श्लोक पितृलोक व पन्द्रह लाख श्लोक गन्धर्व लोक में पठित हो रहे है। कहा भी है-

एकं शतहस्त्रं तु मानुवेषु प्रतिष्ठितम्।

नरदोऽथावयद् देवाअसितो देवलः पितृन्।।[xviii]

इस मनुष्य लोक में एक लाख श्लोकों का आद्य महाभारत प्रतिष्ठित है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि महाभारत भी आर्ष महाकाव्य की श्रेणी में परिगणित होता है। क्योंकि ये लौकिक संसार की लिपीबद्ध साहित्य की सर्वप्रथम रचना है और महाकाव्यों, काव्यों, नाटकसाहित्य जैसे अन्य ग्रंथों के लक्षणों का आधारशिला बनी है। रामायण-महाभारत ग्रंथ के आरम्भ में ही इस बात की स्वीकारोक्ति की गई है कि ये काव्य परवर्ती कवियों के लिए आधार स्तम्भ बनेगा।

रामायण में तीर्थ स्थल-

रामायण में तीर्थ स्थल की शुरुआत बालकाण्ड के द्वितीय सर्ग में ही हो जाती है। अर्थात् रामायण महाकाव्य में तीर्थ शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग बालकाण्ड के द्वितीय सर्ग में हुआ है, यथा-

"सोऽभिषेकं ततः कृत्वा तीर्थं तस्मिन्यथाविधि।

तमेव चिन्तयन्नर्थमुपावर्तत वै मुनिः।।"[xix]

तत्पश्चात् उन्होंने उतम तीर्थ में विधिपूर्वक स्नान किया और उसी विषय का विचार करते हुए वे आश्रम की ओर लौट पड़ें। यहाँ उतम तीर्थ से तात्पर्य तमसा नदी और वाल्मीकि आश्रम के सन्दर्भ में है और इसके बाद तीर्थ स्थलों का उल्लेख तब आता है जब श्रीराम अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ चतुर्दश वर्ष का वनवास हेतु गमन करते है। उनकी वनवास यात्रा में जिस नदी से (सरयू अयोध्या) नाव में

बैठकर प्रस्थान करते है, नगर को (श्रंगनेश्वर) जाते है, आश्रमों में विश्राम करते है, इस प्रकार के विभिन्न स्थलों को तीर्थ की श्रेणी में रखा गया क्योंकि ये सभी स्थल श्रीराम के, सीताजी के, लक्ष्मणजी के (जो देवांश रूप में धरती पर अवतरित हुए) पावन चरणों से, उनके निवास से, उनकी कर्म स्थली बनने से अथवा अन्य किसी न किसी कारण से कार्यरूप में प्रभावित हुए और वे पवित्र हो गए। यात्रा के मध्य में जो कुटिया बनाकर रहे कालान्तर में वे पवित्र आश्रम रूप में परिणित हो गए। रामायण में तीर्थ का मुख्यतः दूसरी बार शाब्दिक प्रयोग ग्रंथ के बालकाण्ड के 61वें सर्ग में आता है। इस सर्ग विषय-वस्तु विश्वामित्र ऋषि की 'पुष्कर' तीर्थ में तपस्या करने के संदर्भ में है। पुष्कर तीर्थ के विषय में ऋषि विश्वामित्र कहते है-

"पश्चिमायां विशालयां पुष्करेषु महात्मन ।

सुश्रं तपश्चरिष्यामः सुख, बुद्धि तपोवनम् ॥"[xx]

विशाल पश्चिम दिशा में जो महात्मा ब्रह्माजी के तीन पुष्कर है, उन्ही के पास रहकर हम सुखपूर्वक तपस्या करेंगे, क्योंकि वह तपोवन बहुत ही सुखद है। यहाँ पश्चिम दिशा से तात्पर्य वर्तमान भारत के राजस्थान प्रांत से है। राजस्थान भारत वर्ष के पश्चिम दिशा में है और पुष्कर तीर्थ राजस्थान प्रांत के अजमेर जिले में आता है। इस पुष्कर तीर्थ का महात्म्य इतना अधिक है कि वेदों, पुराणों, महाभारत आदि ग्रंथों में इसे भली प्रकार वर्णित किया गया है। ब्रह्माजी का एक मात्र मन्दिर जो विश्व प्रसिद्ध है, जो पुष्कर में ही स्थित है साथ ही आधुनिक समय में इस तीर्थ का इसलिए भी महत्व है क्योंकि भारत देश के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की अस्थियां भी यहीं पुष्कर तीर्थ के सरोवर में प्रवाहित की गई थी। पुष्कर तीर्थ पितृ तीर्थ की श्रेणी में आता है। हर वर्ष यहाँ तीर्थ यात्री पुष्कर घाट पर आकर अपने पितरों का श्राद्ध क्रिया कर्म एवं तर्पण करते है। तीर्थ स्थलों में विभिन्न जनपदों, नगरों नदी तटों, पर्वतों, आश्रमों, समुद्र तटों आदि को गिना जाता है। अतः रामायण में इस प्रकार तीर्थ स्थलों के वर्णन की शुरुआत अयोध्या काण्ड के 45वें सर्ग से होती है। जब माता कैकयी की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए श्रीराम पत्नी सीता सहित व भाई लक्ष्मण सहित वनवास यात्रा हेतु प्रस्थान करते है। 45वें सर्ग में श्रीराम अयोध्यापुरी से निकलकर तमसा तट पर पहुँचते है और एक रात्री विश्राम करने के लिए रुकते है। तब वो कहते है-

"ततस्तु तमसातीरं रम्यामाहित्यं राघवः।"[xxi]

"इयमद्य निशा पूर्वा सौमित्रे प्रहिता वनम्।।"[xxii]

तमसा के रमणीय तट का आश्रय राघव बोलें- हम लोग जो वनवास हेतु वन की ओर प्रस्थित हुए है। हमारे उस वनवास की आज यह पहली रात प्राप्त हुई है। 50वें सर्ग में वे अयोध्यापुरी से श्रंगवेरपुर में गंगातट पर पहुँचते है। एक रात्रि वहाँ पर विश्राम करते है और तत्पश्चात वहाँ से प्रस्थान करते है और वत्सदेश में जाते है। यही से मुख्यतः तीर्थ स्थलों वृक्ष, नगर, वन, आश्रम और नदी तट का वर्णन प्रारम्भ होता है। रामायण में मुख्यतः तीर्थ स्थलों का वर्णन अयोध्या काण्ड और युद्धकाण्ड़ में आता है। इन तीर्थ स्थलों में श्रीराम की यात्रा उत्तर दिशा में अयोध्या प्रान्त से प्रारम्भ होकर दक्षिण दिशा में कन्याकुमारी, हिन्दमहासागर तथा लंका जाकर समाप्त होती है।

रामायण में अयोध्याकाण्ड के 68वें में कुछ तीर्थ स्थलों का उल्लेख आता है। जब राजा दशरथ की श्रीराम के वियोग में मृत्यु हो जाती है और उनकी अन्त्येष्टी संस्कार कर्म हेतु राजा भरत जो अपने नाना के यहाँ रहते थे, को अयोध्या नगरी बुलाया जाता है। राजा भरत के राजग्रह नगर (वर्तमान बिहार में) से अयोध्या नगरी तक की यात्रा मार्ग में आने वाले जिन तीर्थों का उल्लेख हुआ है। वे इस प्रकार है- नगर के नाम- हस्तिनापुर, पांचालदेश कुरुजांगल, कैकयदेश, राजगृह, कुलिंग, अमरपर्वत, शल्यकर्षण, उज्जैन, सर्वतीर्थ, प्राग्वटनगर, धर्मवर्धन, जम्बुप्रस्थ, लोहित्य, एकसाल आदि आदि । सरोवर व नदियों के नाम- - मालिनी, तमसा, गंगा, कैशिकी सरयु, पुष्कर सरोवर, यमुना, (55 वें सर्ग) शरदण्डा (वर्तमान नाम शारदा), इक्षुमती, विपाशा (व्यास), शतद्रु नदी(सतलज), शिला शिलावहा, कुलिंग, महान्दी कुटिकोष्टिका, उत्तानिका नदी, कपीवती, स्थाणुमती, गौमती आदि ।

पर्वत के नाम- चित्रकुट पर्वत, सुदामा पर्वत, अपरताल पर्वत, प्रलम्बगिरी पर्वत आदि। वृक्ष व वन के नाम- श्यामवट(यमुना के तट पर), चित्रकुटवन, तेजोऽभिभवन, चैत्ररथ भारुण्डवन, वरुथ, सालवन। आश्रम के नाम- भरद्वाज आश्रम, (गंगा, यमुना, प्रयाग संगम के समीप), पर्णशाला (चित्रकुट)[xxiii] अयोध्यापुरी लौटने के पश्चात् जब राजा भरत को श्रीराम का अपनी पत्नी सीता व भाई लक्ष्मण सहित वनवास जाने का तथा स्वयं का राजा के पद पर अभिषेक किये जाने का समाचार प्राप्त होता है तो वे क्षुब्ध हो जाते है और भरद्वाज मुनि से भेंट करने (सर्ग 91वें) उनके आश्रम में पहुँचते है। वहाँ पर उनके स्वागत सत्कार के लिए आयी हुई कुछ पवित्र नदियों का, वनों का, वृक्षों का, पर्वतों का उल्लेख होता है। जिनमें मलय दुर्दर पर्वत,[xxiv] बेल, कैथ, कहटल, आवंला, विजौरा,[xxv] बहेडे, देवदारु, ताल-तिलक, तमाल, पीपल, शिशपा, आमलकी, जम्बुवृक्ष[xxvi] तथा नन्दन वन वर्णित है। आगे इसी क्रम में श्रीभरत की चित्रकुट यात्रा का (सर्ग 93वें) वर्णन आता है जिसमें

अनेक पर्वतों, वन्य जीवों, मृग, रुरु नामक मृग[xxvii] आदि का उल्लेख है। 94वें सर्ग में चित्रकुट की शोभा का वर्णन आता है। चित्रकुट की शोभा में अनेक वृक्षों आम, जामुन, असन, लोध, प्रियाल, कटहल आदि[xxviii] का उल्लेख होता है। 95वें सर्ग में मन्दाकिनी नदी की शोभा का वर्णन आता है। अरण्यकाण्ड के षोडश सर्ग में गोदावरी नदी का महात्म्य का उल्लेख आता है। 22वें सर्ग में जन स्थान व पंचवटी नगर का उल्लेख आता है। अरण्यकाण्ड में पंचत्रिश सर्ग (35वें) में दक्षिणदिशा में व्याप्त (हिन्द महासागर) समुद्रतटवर्ती प्रांत[xxix] का उल्लेख आता है। यहाँ के वृक्षों में कदलीवन, नारियल के वृक्षों का नामोल्लेख हुआ है और विदित है कि भारत के दक्षिणी भाग में कदली वनों तथा नारियल के वृक्षों की बाहुलता पाई जाती है।

अरण्यकाण्ड के पश्चात् किष्किन्धाकाण्ड में पम्पासरोवर तीर्थस्थल का उल्लेख आता है। जहाँ पर श्रीराम सीताजी के वियोग में पीडित होते हुए दिखायी देते है। पम्पासरोवर की शोभा वर्णन में अनेक वृक्षों तथा जलीय जीवों का भी नामोल्लेख मिलता है। किष्किन्धाकाण्ड के 40वें सर्ग से लेकर 45वें सर्ग जिसमें राम की आज्ञा हेतु सुग्रीव चारों दिशाओं में व्याप्त समुद्रतट, नदियां, पर्वत, वृक्ष, वन्यजीव, वन, नगर आदि का उल्लेख आता है जिसमें पूर्ववर्णित नदियाँ, ब्रह्ममाल, विदेह मालव, काशी, कोसल, मगध, पुण्ड्रदेश, अंगदेश आदि उत्तर दिशा के जनपद,[xxx] शिशिर, मैनाकपर्वत, हिमालयपर्वत, सुमेंरुपर्वत, क्षीरसागर, इक्षुरस रस से परिपूर्ण सागर, शालमलद्वीप, सूवर्णमय उदयगिरी पर्वत, सुदर्शन द्वीप आदि का वर्णन आता है। किष्किन्धाकाण्ड के पश्चात् रामायण के युद्धकाण्ड में दक्षिण भारत के विभिन्न तीर्थों का नामोल्लेख आता है जिनमें हिन्दमहासागर, कन्याकुमारी, रामेश्वरम् उनके द्वारा बनाया गया सेतु (आज के समय में आदम पूल के नाम से विख्यात) श्रीलंका आदि तीर्थो का वर्णन हैं। इस प्रकार रामायण में रामकथा के प्रसंग में श्रीराम जहाँ-जहाँ जाते है, उनकी चरण पादुका पड़ती है और विभिन्न लीलाएं रची जाती है। कालान्तर में ये सभी स्थल तीर्थ रूप में परिवर्तित हो गए, तथा राम भारतवर्ष में कण कण में विराजमान है, चाहे वह मूर्तरूप हो या अमूर्तरूप। इसीलिए पुरुषों में पुरुषोत्तम भगवन् श्रीराम को मर्यादापुरुषोत्तम कहा जाता है। सम्पूर्ण भरतवर्ष राममय है और उनका देवत्त्व स्थान स्थान पर तीर्थस्थलों के रूप में दिखाई देता है।

महाभारत में तीर्थ स्थल

महाभारत ज्ञान का महाभण्डार है। संसार की ऐसी कोई विषय वस्तु बची नहीं है जिसका उल्लेख महाभारत में न हो। इस ग्रंथ के विषय में कहा गया है कि जो सर्वत्र है वह महाभारत में है और जो महाभारत में नहीं है वह अन्यत्र कहीं नहीं। और भी कहा गया है-

तस्य प्रज्ञामिपन्नस्य विचित्रपदपर्वणः ।

सूक्ष्मार्थन्याय युक्तस्य वेदार्थैर्भूषितस्य च ।।[xxxi]

भारतस्येतिहास्य श्रुयतां पर्वसग्रहः ।

पर्वानुक्रमणी पूर्व द्वितीयः पर्वसंग्रहः ।।[xxxii]

यह महाभारत विराट ज्ञानकोश है। इसमें सूक्ष्म से सूक्ष्म पदार्थ है और उनका अनुभव कराने वाली युक्तियाँ भरी हुई है। इसका एक-एक पद और पर्व आश्चर्य जनक है तथा यह वेदों के धर्ममय अर्थ से अलंकृत है। महाभारत में विभिन्न प्रसंगों को लेकर उनकी विस्तारपूर्वक वाक्यरचना की गई है। उन्हीं प्रसंगों में एक महत्वपूर्ण प्रसंग है 'तीर्थ यात्रा'। इसमें पूर्णतीर्थो, पवित्र देशों, वनों, पर्वतों, नदियों और समुद्रों के नामोल्लेख के साथ उनके महात्म्य का भी वर्णन किया गया है। यथा-

तीर्थानां नाम पूण्यानां देशानां चेह कीर्तिनम् ।

वनानां पर्वतानां च नदीनां सागरस्य च ।।[xxxiii]

महाभारत में तीर्थयात्रा या तीर्थ स्थलों से संबंधित पर्वों तथा उपपर्वों में कुरुराज का तीर्थयात्रा पर्व-(वन पर्व)[xxxiv] जम्बुखण्ड़ विनिर्माण पर्व,[xxxv] भूमिपर्व, (द्वीपों का विस्तार विवरण), सारस्वत पर्व (विभिन्न तीर्थों का वर्णन)[xxxvi] दिग्विजयपर्व सभापर्व भीष्मपुलस्त्य ऋषि तीर्थ यात्रा पर्व आदि वर्णित है। महाभारत के वनपर्व में तीर्थयात्रा विषयक अध्याय है जिसमें वह वर्णित किया गया है कि तीर्थयात्रा किन्हें, किस प्रकार व कहाँ से शुरु करनी चाहिए तथा किन लोगों को तीर्थयात्रा का फल प्राप्त होता है। तीर्थयात्रा सेवीजन के लिए तीर्थयात्रा करने से पूर्व मानसिक शुद्धि का होना अनिवार्य बताया है। तत्पश्चात् तीर्थयात्री को अपनी तीर्थयात्रा पुष्कर तीर्थ से प्रारम्भ करनी चाहिए। पुष्कर तीर्थ से प्रारम्भ करने का मुख्य कारण इस तीर्थ की पवित्रता का होना बताया गया है। पुष्कर तीर्थ के विषय में महाभारत वर्णन किया गया है-

दशकोटिसहस्त्राणि तीर्थानां वै महामते ।

सांनिध्यं पुष्करे येषां त्रिसंधयं कुरुनंदन ।।[xxxvii]

अर्थात् पुष्कर में तीनों समय दस सहस्त्र तीर्थों का निवास रहता है। इसीलिए यात्रा को यहाँ से आरम्भ करने के लिए कहा गया है। और भी-

त्रीणि श्रंगाड्रिण शुभ्राणि त्रीणि प्रस्त्रवणानि च ।

पुष्करयाण्यिादिसिद्धाणि न विज्ञस्तत्र कारणम् ।।[xxxviii]

अर्थात् तीन शुभ्र पर्वतशिखर, तीन सोते और तीन पुष्कर ये आदि सिद्ध तीर्थ है। अर्थात् तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ पुष्कर तीर्थ को माना गया है। यह प्राचीनकाल से ही आदिसिद्ध तीर्थ है। अतः तीर्थयात्री को अपनी यात्रा पुष्कर तीर्थ से प्रारम्भ करनी चाहिए अथवा यों कह सकते है कि सर्वप्रथम पितरों को प्रणाम कर पितृ तीर्थ की यात्रा करनी चाहिए। तत्पश्चात् महाभारत निर्दिष्ट तीर्थों की क्रमशः यात्रा करनी चाहिए अर्थात् जिस प्रकार महाभारत के 'तीर्थयात्रा' वनपर्व में जिस क्रम में तीर्थ स्थल निर्दिष्ट किए गए है, उसी क्रम में तीर्थयात्रा करनी चाहिए। उदाहरण के लिए- पुष्कर तीर्थ से जम्बु मार्ग- तन्दुलिकाश्रम- अगस्त्य सरोवर- कण्वाश्रम- ययातिपतन तीर्थ- महाकालतीर्थ- कोटितीर्थ- स्थाणु तीर्थ- नर्मदातट तीर्थ- चम्बल- आबुपर्वत- महर्षि वशिष्ठ आश्रम- प्रभास तीर्थ- सरस्वती व समुद्र का संगम- अरब सागर-द्वारका- पिण्डारकतीर्थ- दमीतीर्थ- वसुधारातीर्थ- सिन्धुत्तम् तीर्थ- भद्रतुंगातीर्थ- शक्रकुमारिका तीर्थ-रेणुकातीर्थ- भीमाशंकर(पूना)तीर्थ- विमलतीर्थ- वितस्तातीर्थ (झेलम)- रूद्रपदतीर्थ- देविकातीर्थ- कामतीर्थ- दीर्घसत्रतीर्थ-विनशन (सरस्वती)तीर्थ- शशयानतीर्थ- कुमारकोटितीर्थ- रुद्रकोटि- अवसानतीर्थ आदि।[xxxix] विदित हो कि यह यात्रा भारत के पश्चिम दिशा से प्रारम्भ होकर उत्तर दिशा में समाप्त होती है। उपरोक्त वर्णित तीर्थ स्थल भारत के पश्चिम दिशा से उत्तर दिशा के मार्ग में पड़ते है। और ये महाभारतकालीन नाम है तो कालान्तर में परिवर्तित हो गए और कुछ आज भी उन्हीं नामों से जाने जाते है यथा- द्वारिका, प्रभासतीर्थ, पुष्कारादि।

महाभारत में बड़े बड़े तीर्थ स्थलों में व्याप्त छोटे-छोटे तीर्थ स्थलों ग्रामों, आश्रमों, नदी, तटों, नदी-घाटों का भी विस्तृत वर्णन किया गया है। उदाहरण के लिए कुरुक्षेत्र, समन्तपंचक तीर्थ की सीमा में स्थित तीर्थ (सततीर्थ, पारिप्लवतीर्थ, दशाश्वमेघतीर्थ, वाराहतीर्थ, कृतशौचतीर्थ, वंशमूलक तीर्थ, लोकोद्वारतीर्थ, श्रीतीर्थ, आदि आदि।) गंगा के प्रमाणकोटि तीर्थ के तीर्थ स्थल, नर्मदा तट के तीर्थ स्थल, सरस्वती के तीर्थ स्थल आदि। कहने का तात्पर्य है कि महाभारत में तीर्थ स्थलों की सूची का भण्डार है जिन्हें किन्हीं विशेष सीमा में परिसीमित नहीं किया जा सकता। रामायण में जिस प्रकार श्रीराम की यात्रा के मार्ग में आने वाले तीर्थों से तीर्थ स्थलों का पता चलता है वहीं महाभारत में तो भारत तथा उसकी बाहरी सीमा में व्याप्त तीर्थों

की पूरी सूची ही प्रस्तुत की गई है। अर्थात् रामायण में उत्तर से दक्षिण के तीर्थ स्थल उल्लेखित है और महाभारत में चारों दिशाओं में व्याप्त तीर्थों के भी सूक्ष्म तीर्थों का वर्णन विस्तारपूर्वक किया है जिनका इस लेख में संक्षिप्त रूप से विवेचन किया गया है। इन समस्त तीर्थों की तीर्थयात्रा करना एक मनुष्य जन्म में संभव नहीं है अतः जो व्यक्ति भारत के जिस भाग में दिशा में निवास करता है अपनी सुविधानुसार महाभारत निर्दिष्ट उस दिशा के तीर्थों की यात्रा करके भी मोक्ष प्राप्ती कर सकता है। इस प्रकार महाभारत में चारों दिशाओं में व्याप्त तीर्थों का वर्णन तथा इसका माहात्म्य को वर्णित किया गया है।

निष्कर्ष- इस प्रकार आर्ष महाकाव्यों में अनेक तीर्थों स्थलों का वर्णन प्राप्त होता है। जो भारतीय सनातन संस्कृति को अंगीकार करते है और जनसमूह तीर्थयात्रा कर अपने पुण्यों का संचय करते है। तथा पापों की निवृत्ति। यह तीर्थ हमारी भक्तिभावपूर्ण व श्रद्धापूर्ण संस्कृति के अनादिकाल से वैभवशाली केंद्र रहें है। इन तीर्थों के स्मरण मात्र से मन की शुद्धि हो जाती है फिर यात्राफल के विषय में तो क्या कहना? ये समस्त देवत्व एवं ऐतिहासिक स्थल हमारी संस्कृति के गौरव का गान युगों-युगों से करते आ रहें है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

[i] मनुस्मृति-12.106

[ii] संस्कृत हिन्दी शब्द कोश

[iii] अमरकोश-3.1.80.2.2

[iv] महाभारत, 132.17.405

[v] भट्टोजी दीक्षित, उणादि, 2/7

[vi] अमरकोश- नानार्थवर्ग, 3.3.86.2.1

[vii] भट्टोजी दीक्षित, उणादि, 2/7

[viii] मनुस्मृति-3.130

[ix] वाल्मीकि रामायण,युद्धकाण्ड,128.107

[x] वाल्मीकि रामायण,युद्धकाण्ड,128.112

[xi] रामायण, बालकाण्ड, 2.15

[xii] ध्वन्यालोक-1.5

[xiii] महाभारत (आदिपर्व)-62/53

[xiv] महाभारत (आदिपर्व)-1/264, 65, 66

[xv] महाभारत (आदिपर्व)-1/264, 65, 66

[xvi] महाभारत/ आदि पर्व/ अनु./102-103

[xvii] महाभारत/ आदि पर्व/ अनु./105-106

[xviii] महाभारत/ आदि पर्व/ अनु./107

[xix] वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड, 2.20

[xx] वाल्मीकि रामायण, 1.61.3

[xxi] वाल्मीकि रामायण, 2.46.1

[xxii] वाल्मीकि रामायण, 2.46.2

[xxiii] वा. रामायण /2/68-70 वें सर्ग

[xxiv] वाल्मीकि रामायण, 2.91.24

[xxv] वाल्मीकि रामायण, 2.91.30

[xxvi] वाल्मीकि रामायण, 2.91.50-51

[xxvii] वाल्मीकि रामायण/ 93/ 2

[xxviii] वाल्मीकि रामायण, 194/ 8-10

[xxix] वाल्मीकि रामायण, 3/ 35/ 12

[xxxi] महाभारत/आदिपर्व/ पर्वसंग्रह/40-41/1

[xxxii] महाभारत/आदिपर्व/ पर्वसंग्रह/40-41/1

[xxxiii] वहीं / अशावतरण पर्व /62 वां अध्याय

[xxxiv] महाभारत/आदिपर्व/ पर्वसंग्रह / 52

[xxxv] महाभारत/आदिपर्व/ पर्वसंग्रह / 67

[xxxvi] महाभारत/आदिपर्व/ पर्वसंग्रह /72

[xxxvii] महाभारत / वनपर्व/ तीर्थयात्रा/ 82/2

[xxxviii] महाभारत / वनपर्व/ तीर्थयात्रा/ 38

[xxxix] महाभारत/आदिपर्व/ तीर्थयात्रा/88 वां अध्याय